अध्याय पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

वर्तमान समय में समाज के सामने प्रमुख रूप से जो राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ हैं समाज स्वयं को इन चुनौतियों से निपटने में अक्षमता अनुभव कर रहा हैं। यदि हम इन समस्याओं का निराकरण करना चाहते है तो पंरपराओं के अनुरूप सत्यम शिवम् सुन्दरम, बन्धुत्वता, वासुदेव, कुटुम्बकम की भावना से ओत–प्रोत पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विकास करना होगा।

मानव की मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर हर क्षेत्र में पर्यावरण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं पर्यावरण में पारिस्थितिकी अवयवों से अंतक्रिया द्वारा विद्यार्थी को यह ज्ञान कराना कि समय के अनुसार पर्यावरण में परिवर्तन पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा उचित जीवन मूल्यों का विकास होता है। विद्यार्थी के सामने क्रियाकलापों द्वारा अपने वातावरण के प्रति उचित आचरण परिचय दे तभी पर्यावरण अभिवृत्ति सार्थक है।

मानव ने मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर हर क्षेत्र में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अतीत की ओर झाक कर देखने पर ज्ञात होता हैं कि प्राचीन काल में मनुष्य पर्यावरण से सघन रूप से जुड़ा हुआ था वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता के लिए वनो की कटाई कर कृषि एवं उद्योगों क्षेत्र स्थापित किए उद्योग से फैल रहे प्रदूषण से पर्यावरण में हो रहे नुकसान की ओर मनुष्य का ध्यान नहीं है। आज पर्यावरणीय समस्याएँ इतनी अधिक बढ़ गयी हैं जिन पर नियत्रंण करना असंभव हो गया हैं। विद्यालय में पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं अभिवृत्ति जितनी अधिक होगी, उतनी ही उसको वह आचरण में लायेगा।

इसलिए विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति को जानना तथा उनका पर्यावरणीय ज्ञान द्वारा व्यवहार में लाना एवं उसका पालन करना । इसी कारण प्रस्तुत शोध अध्ययन पर्यावरण की अभिवृत्ति का अध्ययन है।

5.2 समस्या का कथन :–

''कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति एवं आचरण का अध्ययन''

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति आचरण का अध्ययन।

5.4 परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा 6वीं के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा 6वीं के छात्र, छात्राओं में पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 शोध के चर :–

- स्वतन्त्र चर

  लिंग–छात्र /छात्रा

  क्षेत्र– ग्रामीण /शहरी

  विद्यालय का प्रकार – सरकारी /निजी

- आश्रित चर

  पर्यावरण अभिवृत्ति

  पर्यावरण आचरण

अध्ययन का सीमांकन :–

किसी भी कार्य के लिए उस कार्य के आधार पर उसकी सीमांए निश्चित करना आवश्यक होता हैं। जिनसे कार्य वैधिक एवं विश्वसनीय बन सके। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भी सीमाओं का निर्माण किया गया है जो निम्न है

- भौगालिक दृष्टि से :–

  भौगोलिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत मध्यप्रदेश राज्य के जिला होशंगाबाद के एक शासकीय एवं

एक निजी विद्यालय तक सीमित है।

- वैयक्तिक दृष्टि से :–

  वैयक्तिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत कक्षा 6वीं के छात्र एवं छात्राओं तक सीमित है।

- शैक्षणिक दृष्टि से :–

  शैक्षणिक दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन कक्षा 6वीं, तक सीमित है।

- विषय दृष्टि से :–

  विषयान्तर्गत दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन पर्यावरण अभिवृत्ति एवं आचरण तक सीमित रखा गया है।

  प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक शासकीय तथा एक निजी विद्यालय के 60 विद्यार्थी तक सीमित है।

5.6 न्यायदर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश राज्य के होशंगाबाद जिले एक सरकारी तथा एक निजी / प्राइवेट विद्यालय को शामिल किया हैं यादृच्छिक विधि से न्यायदर्श का चयन किया है।

इस शोध अध्ययन में 2 विद्यालय से कुल 60 विद्यार्थियों का समावेश किया गया है, जिसमें से 30 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 30 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र से है।

5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

संबंधित अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न प्रकार के साधनों का प्रयोग किया गया हैं।

1. **पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी :–**

कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति जानने हेतु डॉ. एन.एन. श्रीवास्तव और कु. शशि दुबे कृत प्रमाणित उपकरण का चयन किया गया ।

2. **पर्यावरण के प्रति आचरण :–**

पर्यावरण के प्रति आचरण मापने हेतु स्वनिर्मित अवलोकन सूची का प्रयोग किया गया ।

5.8 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाण विचलन, टी परीक्षण एवं तर्क संगत विश्लेषण का उपयोग किया गया है।

5.9 अध्ययन के मुख्य परिणाम :–

1. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति स्तर का अनुकूल है।
2. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति आचरण का स्तर सकरात्मक है।
3. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति मे सार्थक अंतर नहीं हैं।
4. छात्र, छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

5.10 अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष :-

1. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण अभिवृत्ति का स्तर अनुकूल है।
2. कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति आचरण सकरात्मक है।
3. कक्षा 6वीं के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कक्षा 6वीं के छात्र, छात्राओं की पर्यावरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अतंर नहीं है।

5.11 शैक्षिक सुझाव :-

1. पर्यावरण शिक्षा वर्तमान समय की मांग है, पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य विषयों के साथ-साथ स्थान दिया जाना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति एवं रूचि बढ़ेगी।
2. विद्यालय में विविध कार्यक्रमों के अंतर्गत परिचर्चा, वाद विवाद, संगोष्ठी, निबंध लेखन, चित्रकला, नाटिका इत्यादि का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों को पर्यावरण से संबंधित जानकारी मिल सके।
3. विद्यालयों में छात्रों को पर्यावरण से संबंधित कार्यक्रम में सार्थक से अधिक सहभागी होने का मौका देना चाहिए जिससे कि छात्रों को पर्यावरण के विविध आयामों के बारे में जान सकें।

4. विद्यार्थियों को पर्यावरण के संबंध में अधिकाधिक जानकारी प्रदान करने हेतु पुस्तकीय ज्ञान देकर औपचारिक पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान नहीं करनी चाहिए वरन् उन्हें क्षेत्र में ले जाकर पर्यावरण से रूबरू कराकर पर्यावरण शिक्षा दी जानी चाहिए उदा. के लिये मिट्टी, वनस्पति जल आदि के संबंध में जानकारी एवं उनके गुण बच्चों को दिखाकर उन्हें अनुभव करा दिये जाना चाहिए ।
5. पारिस्थतिकी अवयवों से अंतक्रिया द्वारा विद्यार्थी को यह ज्ञान कराना कि समय के अनुसार पर्यावरण में परिवर्तन अपने लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाये रखना एवं इनका संरक्षण करना है।

विद्यार्थी को इस प्रकार पर्यावरण परिवेश में ले जाकर दी जाने वाली पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा ही सही अभिवृत्ति स्तर कर पाना संभव हैं क्योंकि वे पर्यावरण से रूबरू होने पर प्राप्त पर्यावरणीय शिक्षा से पर्यावरण के संभव आचरण अपने दैनिक क्रियाकलाप में शामिल कर पायेंगे। वास्तविकता से तभी वे समझ पायेंगे कि हम ओर हमारा पर्यावरण एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण केवल अभिवृत्ति की दृष्टि सें नही बल्कि आचरण की दृष्टि से ही फली भूति किये जाने की अत्यंत आवश्कयता हैं।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव :-

शोधकर्ती के अध्ययन के अन्तर्गत कई प्रश्न सामने आये हैं जिस पर भविष्य में शोध किया जा सकता है।

1. प्राथमिक विद्यालय में पर्यावरण अभिवृत्ति व जागरूकता का अध्ययन ।
2. प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. बी.एड. के छात्र अध्यापकों की पंर्यावरण अभिवृत्ति तथा आचरण का अध्ययन।
4. एन.सी.सी.एवं गैर एन.सी.सी.छात्रों में पर्यावरण अभिवृत्ति एवं संरक्षण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।
5. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति आचरण का तुलनात्मक अध्ययन ।
6. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की पर्यावरण अभिवृत्ति एवं पर्यावरण के प्रति आचरण का तुलनात्मक अध्ययन ।
7. छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण के प्रति तुलनात्मक अध्ययन ।
8. बड़ा प्रतिदर्श लेकर इसी कार्य को उच्च स्तर पर किया जा सकता हैं।